RESEARCH REVIEW JOURNALS
Volume-03
Issue-02
February-2018

ISSN: 2455-3085 (Online)
RESEARCH REVIEW International Journal of Multidisciplinary
www.rrjournals.com [UGC Listed Journal]

अमृतराय के व्यक्तित्व एवं कृतित्व का अध्ययन

Dr.Sapna Gupta

ARTICLE DETAILS

Article History

Published Online: 28 February 2018

Keywords

अमृतराय, व्यक्तित्व एवं कृतित्व,हिन्दी कथाकारए जीवन शैली

ABSTRACT

व्यक्ति के सम्पूर्ण जीवन का नाम ही साहित्य है। साहित्य का जन्म इसी जीवन में होता है और विकास भी। जीवन में भोग हुए तत्वों और किए हुए अनुभवों को ही समाजवेत्ता साहित्यकार साहित्य में स्थापित करता है। हिन्दी कथाकारों में अमृतराय का विशिष्ट स्थान है। प्रगतिशील विचारधारा के प्रमुख चिन्तक एवं कथाकारों में अमृतराय का नाम प्रथम पंक्ति में अंकित है। अमृतराय हिन्दी के कथा सम्राट मुन्शी प्रेमचन्द के कनिष्ठ पुत्र रहे हैं। साहित्यिक परिवेश में उनका बचपन बीता। उस परिवेश का प्रभाव उनके साहित्य पर स्पष्टतः पड़ा। प्रेमचन्द ने अपने साहित्य में जिस सामाजिक चेतना,वर्ग संघर्ष, धर्म और आधुनिक जीवन दृष्टि, भारतीय और पाश्चात्य जीवन शैली के टकराव,संस्कार और वैज्ञानिक दृष्टि सम्बन्धी जिन विसंगतियों को उठाया था उस परम्परा को आगे बढ़ाने में अमृतराय ने अपनी पूरी प्रतिबद्धता दिखाई। उन्होंने अपने साहित्य में मध्यवर्गीय जीवन की विडम्बनाओं के आगे जाकर निम्नवर्ग ,भूमिहीन श्रमजीवी ,सर्वहारा जीवन से तादात्म्य स्थापित कर उच्च वर्ग और सत्ता शोषण का प्रतिरोध किया है। इन सारे तथ्यों, संदर्भों एवं परिप्रेक्ष्य का विस्तार अमृतराय के कथा साहित्य में दृष्टिगोचर होता है।

प्रस्तावना:

किसी भी कृतिकार के व्यक्तित्व निर्माण एवं विकास में उसके पारिवारिक परिवेश, वंश कुल–गोत्र,शैक्षणिक स्थिति एवं विचार दर्शन का महत्वपूर्ण योगदान होता है।युगीन प्रभावों एवं ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य को भी उसके व्यक्तित्व एवं कृतित्व निर्माण के संदर्भ में अनदेखा नहीं किया जा सकता है। साहित्यकार संवेदनशील प्राणी होता है, इसीलिए उसके पारिवारिक प्रभाव एवं युगबोधी संदर्भ, चेतन तथा अवचेतन पर गहरा प्रभाव डालते हैं। अमृतराय ने अपने जीवन में विपुल साहित्य का सृजन किया है। वे मात्र उपन्यासकार, कहानीकार, अनुवादक एवं आलोचक ही नहीं है, अपितु हिन्दी –उर्दू –अंग्रेजी –बंगला भाषा के जानकार अध्येता भी हैं । विश्व की कई प्रसिद्ध कृतियों का उन्होंने अनुवाद किया है तथा हास्य–व्यंग्य की रचनाओं के साथ–साथ 'हंस' का सम्पादन भी किया है।

अमृतराय के व्यक्तित्व एवं कृतित्व के संदर्भ में अनेक सुधी आलोचक एवं रचनाकारों ने न केवल संस्मरण लिखे हैं बल्कि आलोचनात्मक टिप्पणियां भी रची हैं। डॉ प्रभाकर माचवे ने अमृतराय को एक'' जागरूक, प्रगतिशील, राष्ट्रप्रेमी, मनुष्य मात्र के लिए कल्याणदायी, उदार, धर्मनिरपेक्ष और सच्ची जनवादी दृष्टि का रचनाकार''1 घोषित किया है। अमृतराय के कथा साहित्य एवं आलोचना कर्म पर डॉ. कृष्णबिहारी मिश्र, डॉ.कृष्णा माहेश्वरी, डॉ.संध्या, राजेश दुबे, राजकुमार कुम्भज, रामदरश मिश्र, राजकुमार सैनी, धर्मेन्द्र गुप्त, डॉ. देवराज, डॉ.सुधेश, डॉ.विनयमोहन शर्मा, अशोक केलकर, शिवानी, चन्द्रकान्ता, डॉसुभाष दामल , डॉ.जयसिंह प्रदीप, श्यामसुन्दर घोष,डॉ.रंजना गुप्ता,डॉ.मधु गुप्ता और डॉसुधा सिंह आदि ने विवेचनात्मक टिप्पणी की है।

अमृतराय का व्यक्तित्व:अमृतराय आकषक व्यक्ति के धनी रहे है । तार सप्तक परम्पराके प्रसिद्ध कवि गिरिजाकुमार माथुर ने अमृतराय के साथ अंतरंग बातचीत के हवाले में उनके व्यक्तित्व को निम्नलिखित शब्दों में रचा है, ''कथाकार, उपन्यासकार, गद्य–शैलीकार,आलोचक, चिन्तक, जीवनी लेखक, अनुवादक, व्यंग्यकार, सफल सम्पादक, बहुभाषाविद्, –हिन्दी,अंग्रेजी, उर्दू, बंगला पर एक समान अधिकार। इसीलिए इतना कुशल सम्पादन औरअनुवाद का कार्य जिन्होंने किया है और एक तलदर्शी निर्मल जल सा ,खुले व्यक्तित्व का आलोक –विस्तार । जैसा गोरा –चिट्टा, अकलंक, छरहरा, साफ आइने सा शरीर, वैसी ही मुक्त ठहाकेदार, हवाओं तक को गुँजाती हँसी, वैसा ही निर्व्याज व्यवहार, एक पारदर्शी मन, मर्मशील, आत्मदान भरा आश्वस्ति भाव, वक्त पर तेज तर्रार प्रतिक्रियाओं का मिजाज भी, अन्तर का भाव ठहराव भी। भारत की प्राचीनतम नगरी ये प्रयागराज।गंगा–जमुना जैसी विशाल पावन नदियों का संगम।जैसे संस्कृति की अनेक धाराएँ यहाँ आकर मिल जाती हैं, उसी तरह की सांस्कृतिक परम्परा और आधुनिकता, सामाजिकता और

© RRIJM 2015, All Rights Reserved

वैयक्तिकता, हिन्दी–उर्दू और अँग्रेजी का मिलन बिन्दु, अमृतराय का व्यक्तित्व।''

कृतित्व–

1. अमृतराय का उपन्यास संसार–अमृतराय बहुमुखी प्रतिभा के रचनाकार हैं। उन्होंने अपने उपन्यासों 'बीज', 'नागफनी का देश', ' हाथी के दाँत', 'भटियाली' , 'सुख दुःख',' जंगल', और 'धुआँ' तथा' जीवन के पहलू ' से लेकर 'सरगम', 'विद्रोह' कहानी संग्रह से जग जाहिर है। कथा साहित्य के अतिरिक्त उन्होंने गद्य की अन्य विधाओं निबन्ध, आलोचना, व्यंग्य, नाटक, यात्रा वृतान्त, और अनुवाद आदि में भी अपनी लेखनी चलाई है। विभिन्न विधाओं में लेखन के कारण ही अमृतराय एक समर्थ रचनाकार प्रमाणित होते हैं।

2. अमृतराय का कहानी स ंसार– अमृतराय मूलतः बहुमुखी प्रतिभा सम्पन्न साहित्यकार हैं। उन्होंने उपन्यास, कहानी, निबन्ध, आलोचना,नाटक, जीवनी,संस्मरण एवं रेखाचित्र आदि साहित्य की विभिन्नविधाओं के माध्यम से साहित्य की समृद्धि में अपना योगदान दिया है। साहित्य की प्रायः सभी विधाओं में उन्होंने लिखा है। उपन्यास संसार की तरह अमृतराय का कहानी संसार भी व्यापक है।

युगीन परिवेश को अभिव्यक्त करने के लिए प्रतिबद्ध '' अमृत कलाकार भी हैं और आलोचक भी । कलाकार के नाते वे रचना के स्तर पर जो कुछ भोगते हैं, आलोचक के नाते उसका शब्दांकन भी करते चलते है ।'' अतएव बहुसंख्यक कहानी के प्रणेता अमृतराय ने कहानी के सम्बन्ध में अपने विचार भी प्रकट किए हैं। उनके अनुसार कहानी का उद्देश्य केवल मनोरंजन करना नहीं है। अपने एक कहानी संग्रह के निवेदन में उन्होंने कहा है '' मैं स्पष्ट शब्दों में साहित्यकार के सामाजिक दायित्व और साहित्य की सोद्देश्यता के सिद्धांत को स्वीकार करता हूँ।म ं समझता हूँ कि इससे साहित्य की प्रतिष्ठा घटती नहीं, आता, बड़ी अच्छी तरह समझ में आने लग जाती है।''उनका मत है कि अब फिलहाल कहानी के लिए कहानी का महत्व नहीं रह गया है,और एक प्रगतिशील दृष्टिकोण से ही समस्याओं का स्पष्टीकरण होना चाहिए।संभवतःइन्हीं बातों को ध्यान में रखकर अमृतराय को मार्क्सवादी विचारधारा का कहानीकार माना जाता है।

3. अमृतराय के नाटक संग्रह :– अमृतराय प्रगतिशील लेखक संघ के सकिय सदस्य रहे हैं।सन् 42 में नाविकों के विद्रोह,कम्यूनिस्ट पार्टी पर प्रतिबन्ध और भारतीय स्वातं्त्र्य संघर्ष के वे साक्षी रहे हैं।'विचारधारा और साहित्य 'तथा 'नई समीक्षा' जहाँ उनके आलोचक व्यक्तित्व के प्रमाण हैं , वहीं अमृतराय के तीनों नाटक –'चिन्दियों की एक झालर', (1969)'शताब्दी',(1971) तथा 'हम लोग' 1972 उनकी प्रतिबद्ध मार्क्सवादी दृष्टि और जीवन संघर्ष सम्बन्धी समस्याओं के गवाह भी हैं। ये तीनों नाटक सन् 1973 में 'आज अभी' शीर्षक संग्रह में एक साथ प्रकाशित हुए थे। ये तीनों अलग–अलग नाटक हैं किन्तु समसामयिक समस्याओं का चित्रण करने तथा सन्दर्भ एक होने के कारण तीनों मिलकर एक बृहत्तर नाटक का संश्लिष्ट चित्र उपस्थित करते हैं। इसमें आज का बहुरंगी व बहुस्तरीय सामाजिक सामाजिक यथार्थ चित्रित हुआ है। लेखक ने इन तीनों नाटकों में आज के सामाजिक यथार्थ को तीन भिन्न कोणों से देखने व समझने का प्रयास किया है।

4. अमृतराय का निबन्ध साहित्यः– अमृतराय की प्रसिद्धि केवल कथा साहित्य को लेकर नहीं है,उनकी प्रसिद्धि के पीछे उनका निबन्ध साहित्य भी है। अमृतराय की निबन्ध शैली उर्दू–हिन्दी की मिली –जुली गंगा –जमुना शैली है।श्याम सुन्दर घोष के शब्दों में ''अमृतराय की जगह हिन्दी निबन्धों के सीमान्त पर ही मानी जा सकती है। वह हिन्दी की सीमा में भी हैं और वक्त –जरूरत हिन्दी सीमा का अतिक्रमण कर अधिक उन्मुक्त क्षेत्र –हिन्दुस्तानी, उर्दू या देसी बोली –बानी जो भी कह लीजिए,के क्षेत्र में प्रवेश कर जाता है। इस दृष्टि से केवल एक ही लेखक का नाम उसके साथ लिया जा सकता है, वो है अमृतलाल नागर।यह आकस्मिक नहीं है कि दोनों के नाम एक हैं।यह बात दूसरी है कि नागर की शैली में नागरी अर्थात् चतुराई ज्यादा है और अमृतराय ज्यादा निखालिस हैं।अमृतराय के निबन्ध संग्रहों में 'रम्या',' बतरस',' आनन्दम' प्रमुख हैं।

उपसंहारः

अमृतराय ने उपन्यास, कहानी संग्रहों की रचना तो मौलिक सर्जक के तौर पर की है पर वे एक कुशल निबंधकार,संस्मरण कार,यात्रावृत्त लेखक, नाटककार, अनुवादक, व्यंग्यकार,और सम्पादक भी हैं।अमृतराय की प्रतिभा बहुमुखी है।उन्होंने साहित्य की सभी विधाओं में लेखन किया है। अनुवाद कर्म में अमृतराय का योगदान अनुकरणीय है।अमृतराय के उपन्यास साहित्य पर विचार करने से यह तो खुले तौर पर साफ दिखाई पड़ता है कि'' उनके उपन्यासों में सामाजिक कान्ति का लक्ष्य स्पष्ट है। सामाजिक कान्ति के लिए वे वर्ग–संघर्ष का चित्रण करते हैं। आज समाज में यदि प्रगतिशील

शक्तियाँ सामाजिक कान्ति की ओर प्रयाण कर रहीं हैं तो समाज में व्याप्त विभिन्न प्रतिकियावादी शक्तिया उन्हें रोकने के प्रयास में भी लगी हैं। सामाजिक विषमता एवं आर्थिक शोषण को दूर करने के लिए प्रतिकियावादी शक्तियों की पराजय आवश्यक है। अमृतराय ने अपने उपन्यासों में विभिन्न पात्रों के माध्यम से इन दोनों शक्तियों के परस्पर संघर्ष को चित्रित किया है। इनके उपन्यासों के प्रमुख पात्रों में कुछ प्रगतिशील शक्तियों के पात्र हैं तो दूसरे प्रतिकियावादी शक्तियों के। इन दोनों शक्तियों क अतिरिक्त अमृतराय के चरित्रों में सामान्य जन–जीवन की विपन्नता,विवशता,गरीबी आदि का भी यथार्थ चित्रण मिलता है।'

संदर्व ग्रन्थ सूची

1 सम्पा. डॉ.कृष्ण बिहारी मिश्र : कृती साहित्यकार अमृतराय , पृष्ठ 18

2 सम्पा. डॉ.कृष्ण बिहारी मिश्र : कृती साहित्यकार अमृतराय , पृष्ठ 03

3 अजय तिवारी : कल के लिए अक्टूबर –दिसम्बर 96, पृष्ठ 04

4 शिवानी : हिन्दुस्तान , 23 अगस्त 96

5 प्रेमचन्द : उत्तराद्ध अंक 18, पृष्ठ 23

6 अम ृतराय : सहचिन्तन, पृष्ठ 48

7 गिरिजा कुमार माथुर : एक अंतरंग बातचीत अमृतराय से , पृष्ठ 19

8 राजकुमार कुम्भज : अक्षरा 35 , जुलाई दिसम्बर 96 , पृष्ठ 13

9 गिरिजा कुमार माथुर : एक अंतरंग बातचीत अमृतराय से , पृष्ठ 11

10 गिरिजा कुमार माथुर : एक अंतरंग बातचीत अमृतराय से , पृष्ठ 42

11 गिरिजा कुमार माथुर : एक अंतरंग बातचीत अमृतराय से, पृष्ठ 42–43

12 सम्पा.डॉ.कृष्ण बिहारी मिश्र : कृती साहित्यकार अमृतराय , पृष्ठ 160

© RRIJM 2015, All Rights Reserved